International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :editoraarf@gmail.com

दिनकर का युग बोध

डा. हिमांशु प्रियदर्शी

एस0आर0के0जे0 हाई स्कूल कुशहर

सारांश

ओज, पौरुष और क्रांति के सर्वमान्य कवि दिनकर के काव्य में युग–चेतना का स्वर प्रमुखता से प्रस्फुटित हुआ है। दिनकर (कबीर और निराला की भाँति) क्रांतिकारी कवि हैं। उनका काव्य अपने युग का यथार्थ बोध तो कराता ही है, साथ ही उन्हें युग–द्रष्टा होने का भी भान कराता है। इस कारण इन्हें युग गायक भी कहा गया है। इसके लिए उनके 'जनतंत्र का जन्म' कविता का उदाहरण द्रष्टव्य है– ''दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो/सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।''

दिनकर का आविर्भाव उस काल में हुआ जब साहित्य में 'वादो' का प्रारंभ हो चुका था और छायावाद अपने चरमोत्कर्ष पर था। साथ ही खड़ी बोली के प्रणेताओं और राष्ट्रीयता प्रधान स्वच्छंदतावादी काव्यधारा का युग था। अतः दिनकर छायावादोत्तर युग के राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि हैं। दिनकर की साहित्य के क्षेत्र में अवतरित होने के समय को रेखांकित करते हुए देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' ने लिखा है–''दिनकर जी ने जिस समय हिन्दी काव्य जगत को अपने शंख–निर्घोष से निनादित किया था, उस समय 'छायावाद' के रूप में प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की बृहद् चतुष्टयी की समवेत काव्य–साधना का बोलबाला था। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त का काव्यावदान पूर्व– पीठिका के तौर पर संदर्भित किया जाने लगा था। उधर राष्ट्रीयता प्रधान

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

स्वच्छंदतावादी कावयधारा के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी और सोहनलाल द्विवेदी भी ख्याति के उच्चतर सोपानों को सुशोभित कर रहे थे। ऐसी गहमागगहमी के दौड़ में अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए जो संघर्ष कवि दिनकर ने किया उसकी गाथा भी, कम संर्घषपूर्ण नहीं है।''[1]

भूमिका

ओज और क्रांति के अग्रदूत कवि दिनकर का युग चेतना काव्य युग चेतना से संपृक्त है। दिनकर अतीत की ध्वनि से वर्तमान को जाग्रत करने वाले युग चारण कवि हैं । दिनकर का अविर्भाव उस समय होता है जब देश आजादी के लिए छटपटा रहा था, बेचैन था । इस कारण उनके काव्य में क्रांतिकारी स्वर स्फुटित हुआ । दिनकर का काव्य संकल्प, संघर्ष, आस्था और जिजीविषा का काव्य है । इनकी कविता राष्ट्र को जाग्रत करने वाली, समय संदर्भों से संवाद करने वाली कविता है ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में राष्ट्रकवि होने का गौरव अभी तक दो ही कवि को मिला है– पहला मैथिलीशरण गुप्त और दूसरा रामधारी सिंह 'दिनकर'। जहाँ गाँधी जी ने गुप्तजी को यह उपाधि दी जिसे पूरे देश ने स्वीकार की और वही दिनकर जी को यह उपाधि हिन्दी समाज (जगत) ने ही दिया जिसे पूरे राष्ट्र ने सहर्ष स्वीकार किया। इसके पीछे दिनकर का राष्ट्रवादी स्वर ही प्रमुख था। ऐसा लगता है कि दिनकर ने अपना चिंतन राष्ट्र और राष्ट्रीयता को ही समर्पित किया था। इस राष्ट्र–चिंतन की झलक केवल उनकी कविताओं में ही नहीं, बल्कि उनके निबंधों में भी मिलती है। इसका सशक्त उदाहरण उनका निबंध –संग्रह 'संस्कृति के चार अध्याय' हैं।

तथ्य विश्लेषण

दिनकर का प्रारंभिक जीवन आभावों एवं संघर्षो में बीता। उनकी कविता में उनके जीवनानुभव का असर स्पष्ट दिखाई देता है । दिनकर की कविता उनके जीवनानुभव से संपृक्त है । दिनकर छात्र जीवन से ही कविता लिखना प्ररंभ कर दिया था । इनकी प्रारंभिक कविता 'छात्र सहोदर' पत्रिका में 1925 में छपी। तत्पश्चात 1928 में इनका पहला

कविता संग्रह 'विजय संदेश' शीर्षक नाम से प्रकाशित हुआ । 1930 में पहला काव्य संग्रह 'प्रणभंग' खण्ड काव्य प्रकाशित होती है । इसमें दिनकर महाभारत की छोटी सी घटना की काव्यमय अभिव्यक्ति के माध्यम से देश की सुप्त जनता को जाग्रत करने की कोशिश करते हैं । रेणुका 1935ई0 के प्रकाशित होने के बाद हिन्दी जगत में प्रसिद्ध कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं । इस काव्य–ग्रंथ में कवि के मानवतावादी प्रवृति के दर्शन होते हैं ।

सन् 1939 ई0 में 'हुँकार' काव्य के प्रकाशन के बाद दिनकर एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में, जागरण कवि के रूप में पूरे देश में प्रसिद्ध हो जाते हैं । देश जब–जब भी बाहरी एवं भीतरी संकटों से घिरा। उन्होंने अपनी हुँकार से देश की जनता को सचेत एवं जागृत किया। साथ ही हुंकार के साथ अपने उदय का उदघोष भी –

''सलिल कण हूँ कि परावार हूँ मैं ?
स्वयं छाया, स्वयं आभार हूँ मैं ।

बँधा हूँ स्वप्न है, लघुवृत में हूँ,

नही ंतो व्योम का विस्तार हूँ मैं।

सुनूँ क्या सिंधु! मैं गर्जन तुम्हारा ?

स्वयं युग धर्म की हुंकार हूँ मैं।'' [2]

दिनकर वस्तुतः किसी 'वाद' के पक्षधर नहीं हैं। दिनकर वादों का अतिक्रमण करने वाले कवि हैं और विचारधाराओं की अंधी प्रतिबद्धता में उनका भरोसा कभी नहीं रहा। उनके काव्य में विद्रोह और क्रांति की भावनाएँ देखकर उन्हें प्रगतिवादी समझा जाता था। इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''हटो व्योम के मेध, पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं,

''दूध –दूध ओ वत्स! तुम्हारा, दूध खोजने हम जाते हैं।''[3]

उन्होंने शोषित, दमित, दलित और उपेक्षित जनता की पीड़ा को वाणी दी और उसे न्याय दिलाने के लिए सदा सचेष्ट रहे। किसानों और मजदूरों के प्रति उनके मन में गहरी सहानुभूति थी। उनके दीन –हीन दशा के प्रति कवि के मन में असीम पीड़ा है, दर्द है, बेचैनी है। उनके दर्द को वाणी देते हुए लिखा–

'' जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,

छूटे बैल के संग कभी जीवन में, ऐसा याम नहीं है।''[4]

दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरूकता । कवि अपने देश और काल के सत्य को अनुभूति और चिंतन दोनों ही स्तर पर ग्रहण करने में समर्थ हुआ है ।

कवि ने अपने समय की कटु और कुटिल सचाई से कहीं भी आँखें नहीं चुराई । उसका कर्त्तव्य बोध उसे सर्वत्र प्रेरित करता है। वे कहते हैं–

''श्वानों को मिलते दूध–वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,

माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं

युवती के लज्जा–वसन बेच जब व्याज चुकाए जाते हैं,

मालिक जब तेल –फुलेलों पर पानी –सा द्रव्य बहाते हैं।''[5]

स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्षों बाद भी देश की हालत में कोई विशेष बदलाव नहीं आया था। उन्होंने भूख, बेरोजगारी, बेगार, अत्याचार और शोषण से पीड़ित कोटि–कोटि जनता को कराहते देखा । जब वे देश की राजधानी दिल्ली गए तो वहाँ की (शहंशाही) राजशाही ठाट–बाट और वैभव को देखकर उनकी आत्मा कराह उठी। 'दिल्ली' शीर्षक कविता में उन्होंने अपने आक्रोश और मनोभाव को व्यक्त किया है–

'' तू न ऐंठ मदमाती दिल्ली!

मत फिर यों इतराती दिल्ली!

वैभव की दीवानी दिल्ली!

कृषक–मेघ की रानी दिल्ली!

अनाचार, अपमान, व्यंग्य की

चुभती हुई कहानी दिल्ली।''[6]

दिनकर द्वंद्व के कवि हैं । द्वंद्व मनुष्य की वृत्ति है । द्वंद्व जब वेगवती होती है तो संकल्प और गहरा हो जाता है । यह द्वंद्व कवि के शब्दशः 'द्वंद्व– गीत' नामक काव्य संग्रह में मुखर हुआ । 'द्वंद्व–गीत' काव्य संग्रह में स्वप्न और यथार्थ का द्वंद्व है, जिसे दिनकर गीत का रूप देते हैं ।

'सामधेनी' काव्य–संग्रह के माध्यम से दिनकर अन्तर्राष्ट्रीय चेतना से सम्पन्न कवि के रूप में प्रकट होते हैं, किन्तु राष्ट्रीय चेतना के प्रति वे अधिक सजग दिखते है । दिनकर के इस काव्य संग्रह में उनका युग द्रष्टा रूप उभरा है ।

दिनकर का कुरूक्षेत्र विचार प्ररक काव्य है । यह विश्व, जगत को संदेश देने वाला काव्य है । जहाँ समता हो, समरसता हो वहाँ मनुष्यता महिमा मंडित हो सके । आधुनिक युग की सर्वाधिक समस्या है युद्ध और शांति की । यही समस्या कुरूक्षेत्र की मूल समस्या है और इस समस्या का विश्लेषण और समाधान कवि ने भारतीय दृष्टिकोण से किया है । युद्ध कोई नहीं चाहता लेकिन जब युद्ध के सिवा और कोई चारा नहीं हो तो लड़ना ही आखिरी विकल्प है । अन्याय और यातना के विरूद्ध विगुल फुकते हुए वे लिखते हैं–

''समर निंद्य है धर्मराज पर,

कहो शांति वह क्या है?

जो अनीति पर स्थिर होकर भी

बनी हुई सदला है।''[7]

किसी भी राष्ट्र के लिए युद्ध को विकास अथवा विस्तार के साधन के रूप में नहीं स्वीकारा जा सकता परन्तु देश की आत्मरक्षा के लिए सैन्य–शक्ति का सन्तुलन और उसके प्रयोग की सामर्थ्य को दिनकर ने राष्ट्र का आवश्यक अंग माना है। स्वत्व, धर्म और सम्मान की रक्षा के लिए जो युद्ध किया जाता है वह पाप नहीं होता। वे लिखते हैं–

''छीनता हो स्वत्व कोई, और तू

त्याग–तप से काम ले यह पाप है।

पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे

उठ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।''[8]

दिनकर जी युद्ध–कालीन कर्तव्य–कर्मों तथा युद्ध के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण 'कुरुक्षेत्र' मे प्रस्तुत किया है, किन्तु युद्ध को जीवन या समाज के साध्य रूप में उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया । उनकी कामना यही रही–

''धर्म का दीपक, दया का दीप,

कब जलेगा, कब जलेगा, विश्व में भगवान?

कब सुकोमल ज्योति से अभिसिक्त

हो, सरस होंगे जली–सूखी रसा के प्राण?''[9]

युद्ध चाहे जिस कारण से होते रहे हों, युद्ध के लिए कोई एक व्यक्ति उत्तरदायी न होकर सारा समाज होता है। इसलिए युद्ध के कारणों पर समष्टिगत रूप में विचार करना हेागा, व्यक्तिगत रूप में नहीं।

रश्मिरथी (1952 ई0) महाभारत के विशिष्ट पात्र कर्ण के चरित्र पर आधारित एक प्रबंध काव्य है । 'रश्मिरथी' आधुनिक युग–चेतना का वाहक काव्य है। दिनकरजी ने इसकी भूमिका में स्पष्ट कर दिया है कि यह युग दलितों और उपेक्षितों के उद्धार का युग है, मानवीय गुणों की पहचान का युग है, निजी गुणों से अर्जित पद प्राप्त करने का युग है। इसके माध्यम से कवि समाज में व्याप्त पूँजिवादी, जातिवादी व्यवस्था पर करारा प्रहार करता हैं । यह मनुष्य की शक्ति और विजय यात्रा का काव्य है । वे लिखते हैं–

''खम ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।

मानव जब जोर लगाता है,पत्थर पानी बन जाता है ।''[10]

उर्वशी (1961ई.) के प्रकाशन के बाद वे संवेदनशील और क्रांतिकारी कवि के साथ दार्शनिक और प्रेम के कवि के रूप में सामने आते हैं । उर्वशी कामाध्यात्म का काव्य है । हमारे ऋषि मनिषियों ने माना है कि काम ही जब साधना से दिप्त हो जाता है, तब मनुष्य की कुण्डलनी उर्द्धगामी होती है । तो वही काम अध्यात्म में परिणत हो जाती है ।

'उर्वशी' में व्यक्त–प्रेमदर्शन को 'वासना' से 'दर्शन' तक पहुँचाया गया है –

''पहले प्रेम स्पर्श होता है

तदनन्तर चिन्तन भी।

प्रणय प्रथम मिट्टी कठोर है

तब वायव्य गगन भी।'' [11]

'उर्वशी' नाट्य काव्य है, 'उर्वशी' प्रबंध–काव्य भी है । 'उर्वशी' की भाषा नयी भाषा है। दिनकर की प्रेम दृष्टि 'उर्वशी' में पूर्णतः फलित हुई है । दिनकर का पुरूषार्थ बोल उठता है –

''मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,

उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं ।''[12]

निष्कर्ष –

दिनकर के काव्य का मूल स्वर विस्फोट और विद्रोह है । रेणुका, हुँकार, कुरूक्षेत्र और उर्वशी इस विस्फोट के विभिन्न क्षेत्र है । दिनकर अपने युग का चारण कवि हैं । सच्चाई यह है कि वे समाजिक चेतना के चारण कवि हैं । वे अपनी कविता से समाज में परिर्वतन लाना चाहते हैं । दिनकर की काव्य बोध अभाव से भाव निषेध से स्वीकृति, निवृत्ति से प्रवृत्ति, दिवास्वपनों से चिंतन , और कल्पना से कर्म की ओर अग्रसर हुई है । दिनकर का साहित्य संस्कृति–चिंतन हिन्दी साहित्य की मूल्यवान उपलब्धि है । दिनकर का काव्य–संग्रह यौवन के उद्याम वेग की वाणी ही नहीं युग की वाणी भी है। दिनकर की इन रचनाओं में इस प्रकार युगद्रष्टा के साथ–साथ उनका युग– स्रष्टा का रूप भी दर्शित होता है।

संदर्भ– सूची

1. देवेन्द्र शर्मा 'इंद्र' आजकल अक्टूबर 2008 पृ0 8–9
2. रामधारी सिंह दिनकर, हुँकार, उदयाचल, पटना, पृ0 102–103
3. वही, पृ0 36
4. वही, पृ0 34
5. वही, पृ0 84
6. वही, पृ0 63–64
7. रामधारी सिंह दिनकर, कुरुक्षेत्र, तृतीय सर्ग, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पृ0 – 20
8. वही, द्वितीय सर्ग, पृ0 16
9. रामधारी सिंह दिनकर, कुरुक्षेत्र षष्ट सर्ग, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली पृ0 – 66
10. रामधारी सिंह दिनकर, रश्मिरथी, उदयाचल, पटना, पृ0 –27
11. रामधारी सिंह दिनकर, उर्वशी, तृतीय अंक, उदयाचल पटना, पृ0– 48
12. वही, पृ0 53